AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 04| May 2022| *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 37-41

असहयोग आन्दोलन एवं जनसहभागिता (बुन्देलखण्ड के विशेष सन्दर्भ में)

दुर्गेश कुमार शुक्ला
सहायक प्राध्यापक राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मुनस्यारी ,इतिहास ,पिथौरागढ (उत्तराखण्ड)
एवं शोध छात्र छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर उ.प्र

~~~~~~

सारांश :–

लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में सितम्बर 1920 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में स्वराज्य की स्थापना होने तक असहयोग कार्यक्रम चलाने की स्वीकृति प्रदान की गयी। इस प्रस्ताव को कार्यरूप में परिणित करने के लिये दिसम्बर 1920 में विजय राघवाचारी की अध्यक्षता में हुये नागपुर के अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम का अनुमोदन कर दिया गया। कांग्रेस के ध्येय में भी परिवर्तन हुआ। अब कांग्रेस का ध्येय "भारत के लिये सब प्रकार के उचित तथा शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा स्वराज्य प्राप्त करना"। असहयोग आन्दोलन में जो कार्यक्रम चलाये गये, इनमें भारत के सभी वर्गों ने बढ़–चढ़ कर भागीदारी की। असहयोग आन्दोलन देश में अभूतपूर्व उत्साह पैदा कर दिया। देश की जनता में इतनी अधिक उत्तेजना कभी नहीं फैली थी। यह पहला अवसर था जबकि देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई को जनता का आधार मिला था। गाँधी जी ने आन्दोलन में भाग लेने तथा उसे सफल बनाने के लिये आमजनता को प्रोत्साहित किया। इसके लिये उन्होने सम्पूर्ण देश का भ्रमण किया। उसी क्रम में गाँधी बुन्देलखण्ड भी आये। बुन्देलखण्ड के जनमानस ने गाँधी जी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन में अपनी अग्रणी भूमिका का निर्वाहन किया तथा आन्दोलन को सफल बनाने का प्रयास किया।

कुन्जी शब्द :– सहभागिता, स्वराज्य, बहिष्कार, सत्याग्रह, स्वाधीनता।

सितम्बर 1920 में, कांग्रेस का विशेष अधिवेशन कलकत्ता में आयोजित किया गया । इस अधिवेशन में कांग्रेस ने पंजाब एवं खिलाफत के मुद्दे को हल किये जाने तथा स्वराज्य की स्थापना होने तक असहयोग कार्यक्रम चलाने की स्वीकृति प्रदान की। इसके पूर्व ही भारतीयों के अंग्रेजों के खिलाफ बढते हुए असन्तोष पर विचार करने के लिए दिसम्बर 1919 में एक बैठक बुलायी गयी। इस बैठक में कांग्रेस को आम लोगों की संस्था

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Durgesh Kumar Shukla Asst. Professor Govt. P.G. College Munsyari, Pithoragarah, Uttarakhand Email: shukladurgeshkumar331@gmail.com	
~~~~~~

बनाने तथा स्वराज्य के लिये ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध सीधी कार्यवाही करने के लिये विचार किया गया। कांग्रेस का नया संविधान बनाने का दायित्व महात्मा गॉधी को सौंपा गया। गॉधी जी ने कांग्रेस को खिलाफत आन्दोलन का समर्थन करने और ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध असहयोग करने की सलाह दी। अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग आन्दोलन सम्पूर्ण भारत में चलाया जायेगा। कांग्रेस ने असहयोग आन्दोलन चलाने के लिये निम्न कार्यक्रम तय किये–

1– सरकारी शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार।

2– न्यायालयों का बहिष्कार तथा पंचायतों के माध्यम से कार्य करना।

3– विधान परिषदों का बहिष्कार।

4– विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा इसके स्थान पर खादी को बढावा दिया गया। चरखा कातने को बढावा दिया गया।

5– सरकारी उपाधियों तथा अवैतनिक पदों का परित्याग।

6– सरकारी सेवाओं का परित्याग, सरकारी करों का भुगतान न करना।

7– सरकारी तथा अर्द्धसरकारी उत्सवों का बहिष्कार करना।

8– सैनिक, मजदूर, क्लर्कों का मैसोपोटामिया में कार्य करने के लिये न जाना।

दिसम्बर 1920 में कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम का अनुमोदन कर दिया गया।

महात्मा गॉधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन 1921 में प्रारम्भ हुआ। इस आन्दोलन में महात्मा गॉधी ने अहिंसा के सिद्धान्त पर बल दिया। सबसे पहले उन्होंने स्वयं गवर्नर जनरल के पास अपना 'कैसरे हिन्द' पदक वापस भेज दिया। आन्दोलन के आरम्भ होते ही समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपनी सहभागिता सुनिश्चित की।

मध्य वर्ग :– मध्य वर्ग के लोगों ने आन्दोलन के प्रारम्भ में ही इस आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया। इसमें मोतीलाल नेहरू, जवाहर लाल नेहरू, सी0आर0दास, राजगोपालाचारी, सैफुद्दीन किचलू, वल्लभभाई पटेल, आसफ अली, टी0 प्रकाशम, राजेन्द्र प्रसाद प्रमुख थे।

व्यवसायिक वर्ग :– आर्थिक बहिष्कार को भारतीय व्यवसायिक वर्ग से समर्थन प्राप्त हुआ, क्योकि उन्हे राष्ट्रवादियों द्वारा स्वदेशी के उपयोग पर बल से लाभ हुआ था। लेकिन बडे उद्योगपतियों का एक वर्ग इस आन्दोलन के प्रति संशयवादी रहा।

किसान :– इस आन्दोलन में किसानों की सहभागिता व्यापक थी। देश के अनेक भागों में करबन्दी आन्दोलन चल रहे थे। निम्न एवं ऊँची के जाति के बीच का छूत–अछूत का मामला असहयोग आन्दोलन में लुप्त हो गया। इस आन्दोलन ने परेशान जनता को ब्रिटिश शासन और साथ ही साथ भारतीय स्वामियों के खिलाफ अपनी भावना व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया।

विद्यार्थी :– विद्यार्थियों ने आन्दोलन में सक्रिय एवं स्वैच्छिक भूमिका निभायी और उनमें अधिकतर ने सरकारी विद्यालयों एवं कॉलेजों को छोडकर राष्ट्रीय स्कूलों एवं कॉलेजों में प्रवेश लिया। इस समय देश में 800 राष्ट्रीय स्कूल एवं कॉलेज थे। काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ, जमिया मिलिया इस्लामिया , नेशनल कॉलेज कलकत्ता एवं अन्य जैसे नवीन स्थापित संस्थाओं ने कई विद्यार्थियों को प्रवेश दिया।

महिलायें :– महिलाओं ने पर्दा प्रथा त्याग कर तिलक फण्ड में अपने आभूषण दान दिये। उन्होंने बडी संख्या में आन्दोलन में भाग लिया और विदेशी कपडों की होली जलाने के कार्यक्रम में भाग लिया। ताड़ी एवं मदिरा की दुकानों पर धरना का कार्यक्रम अधिक लोकप्रिय हुआ। सरोजनी नायडू और उर्मिला देवी ने पूरे देश में महिलाओं का नेतृत्व किया।

हिन्दू मुस्लिम एकता :– हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर इस आन्दोलन में भाग लिया। कई स्थानों पर गिरफ्तार लोगों में दो तिहाई मुसलमान थे। इस प्रकार की सहभागिता न तो अतीत में और न ही भविष्य में देखने को मिली।

बुन्देलों के उत्कर्ष और उनके सत्ता हस्तगत करने के बाद 16वीं शताब्दी में इस जनपद का नाम बुन्देलखण्ड पड़ा। यह भारत के मध्य में स्थित है। प्राचीन काल में इसे विभिन्न नामों से जैसे पुलिन्द, दशार्ण, चेदी, मध्यदेश आदि नामों से जाना जाता था। इसको "जैजाकभुक्ति" के नाम से भी जाना जाता था। इस राज्य का जयशक्ति नाम का अत्यधिक शक्तिशाली राजा हुआ था। इसके राज्य का विस्तार यमुना से नर्मदा तक था। इसी के नाम पर यमुना से नर्मदा तक का भाग "जैजाकभुक्ति" कहलाया। भारत के मध्य में स्थित बुन्देलखण्ड की पारम्परिक भौगोलिक भाषाई और सांस्कृतिक सीमायें उत्तर से यमुना , दक्षिण में नर्मदा, पश्चिम उत्तर में चम्बल और पूर्व उत्तर में टोंस नदियों से निर्धारित होती थी। इसका प्राचीन नाम "दर्शाण " था। जिसका शाब्दिक अर्थ है, दशजल वाला। इस प्रकार बुन्देलखण्ड का नाम दर्शांण नाम दस नदियों के कारण पडा। ये नदियाँ निम्न हैं–धसान, पार्वती, सिन्ध, बेतवा, चम्बल, यमुना, नर्मदा, केन, टोंस और जामनेर। इस भू–भाग को कभी भी कोई भी केन्द्रीय व प्रान्तीय सत्ता अपने पूर्ण नियंत्रण में नहीं रख सका। अंग्रेजों ने इस भू–भाग को तीन भागों में विभक्त कर दिया था। एक भाग को संयुक्त प्रान्त में मिला दिया। दूसरा, भाग को सेन्ट्रल इण्डिया (मध्यप्रान्त) में मिला दिया। ब्रिटिश सरकार में स्वामीभक्त रजवाड़ों के माध्यम से बुन्देलखण्ड पर नियन्त्रण करने का प्रयास किया।

बुन्देलखण्ड में सर्वप्रथम झाँसी में 1916 में एक संयुक्त प्रान्त राजनैतिक कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया था। जिसके स्वागताध्यक्ष सी0 वाई0 चिन्तामणि बनाये गये थे। 1919 में गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन के आवहन पर सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में इसकी प्रतिक्रिया प्रारम्भ हो गयी थी। इस आन्दोलन में बुन्देलखण्ड के सभी जिले प्रभावित हुये। झाँसी, हमीरपुर और बाँदा जिलों की इस आन्दोलन में अग्रणी भूमिका रही। महात्मा गाँधी के प्रभाव के कारण बुन्देलखण्ड की महिलाओं, मजदूरों, किसानों, मध्यवर्ग तथा आमजनमानस ने असहयोग आन्दोलन में बढ़–चढ़ कर भागीदारी की।

कलकत्ता अधिवेशन के बाद गाँधी जी ने लोगों में उत्साह उत्पन्न करने के लिए सम्पूर्ण देश का दौरा किया। इसी क्रम में 1920 में महात्मा गाँधी पहली बार झाँसी आये। गाँधी जी को लोगों से भरपूर समर्थन और स्नेह मिला था। उनके आवहन पर यहाँ हजारों युवा स्वतंत्रता के राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े थे। गाँधी जी की बातों से प्रेरित होकर बुन्देलखण्ड का युवा उनके बनाये रास्ते पर निकल पड़ा था।

झाँसी में असहयोग आन्दोलन :– झाँसी नगर एवं जिले में असहयोग आन्दोलन की तीव्र प्रतिक्रिया हुयी। इस आन्दोलन में आत्माराम गोविन्द खेर, रघुनाथ विनायक धुलेकर लक्ष्मणराव कदम, कुन्जबिहारी लाल शिवानी, कालका प्रसाद अग्रवाल, कृष्ण गोपाल शर्मा तथा महिलाओं में पिस्ता देवी तथा चन्द्रमुखी देवी की प्रमुख भूमिका रही।

झाँसी में इस समय प्रमुख शिक्षण संस्थान मैकडोनल हाई स्कूल था। अनेकों छात्रों ने इस संस्था का बहिष्कार किया । इसी समय कुछ अध्यापकों ने एक विद्यालय की स्थापना की जिसका नाम सरस्वती विद्यालय

था। इसके संस्थापक मैकडोनल हाई स्कूल के अध्यापक हर नारायण गौरहार थे। झाँसी में बहुत सारे वकीलों ने अदालतों का बहिष्कार किया जिनमें सबसे प्रमुख कालका प्रसाद अग्रवाल थे।

हमीरपुर में असहयोग आन्दोलन :– हमीरपुर में असहयोग आन्दोलन के प्रमुख केन्द्र कुलपहाड़ और महोबा थे। असहयोग आन्दोलन में भाग लेने वाले प्रमुख लोग दीवान शत्रुघ्न सिंह इनकी पत्नी राजेन्द्र कुमार, कुँअर हरप्रसाद सिंह, महोबा के पं0 बैजनाथ तिवारी, बालेन्दु अरजारिया प्रमुख थे। बाद में यह आन्दोलन राठ में भी व्यापक रूप से फैला।

बाँदा में असहयोग आन्दोलन :– महात्मा गाँधी के आवहन पर कुँअर हर प्रसाद के नेतृत्व में बाँदा में असहयोग आन्दोलन चलाया गया। पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री ने 1920 में राजकीय विद्यालय बाँदा से त्यागपत्र दे दिया। इनके साथ सेठ विष्णु करण मेहता भी असहयोग आन्दोलन में सक्रिय हो गये। यहाँ सुखवासी लाल, श्री जुगल किशोर सिंह, शम्भू दयाल श्रीवास्तव आदि ने सरकारी नौकरियों से त्यागपत्र दे दिया।

असहयोग आन्दोलन में बाँदा के अनेकों छात्रों ने सरकारी विद्यालयों को त्याग दिया तथा गाँधी जी के मिशन को पूरा करने में जुट गये। इन छात्रों में प्रमुख चन्द्रभान विभव, मिथिला शरण, जगन्नाथ कलार, शम्भूनाथ सिन्हा, श्यामसुन्दर श्रीवास्तव, सत्यनारायण पाण्डेय, मुन्नी लाल अग्रवाल, राधेश्याम सेठ, बृजबिहारी सेठ, भगवानदास पुरवार, भूपेन्द्र निगम, मदन मोहन पुरवार, रामगोपाल गुप्त तथा मातादीन चौरसिया थे। कुँअर हर प्रसाद तथा रमाशंकर रावत ने अदालतों में जाकर वकीलों को अदालतों का बहिष्कार करने को प्रेरित किया।

धीरे–धीरे यह आन्दोलन सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में फैल गया। ललितपुर में नन्दकिशोर, शादी लाल दुबे, उरई जालौन में चन्द्रभान विद्यार्थी, मोतीलाल वर्मा ने गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित होकर इस आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया।

1919–20 में गाँधी जी के नेतृत्व में यह अहिंसक आन्दोलन भारत के साथ ही सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में फैल गया। इसमें सभी जगह शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किये गये। सबसे पहले न्यायालयों का बहिष्कार किया गया। हड़ताल एवं सत्याग्रह चलाया गया। शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार किया गया। शराब एवं विदेशी वस्तुएें बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया गया। विदेशी वस्तुओं की होली जलायी गयी। हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर इस आन्दोलन में अपनी सहभागिता की। यह आन्दोलन बुन्देलखण्ड के गाँव– गाँव में फैल गया।

बुन्देलखण्ड असहयोग आन्दोलन में महिलाओं की सहभागिता सराहनीय रही। महिलाओं ने पुरूषों के साथ बराबरी में इस आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया। महिलाओं ने धरने और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार में बढ़–चढ़ कर योगदान दिया। बुन्देलखण्ड में असहयोग आन्दोलन में योगदान देने वाली प्रमुख महिलाओं में झाँसी की पिस्ता देवी, चन्द्रमुखी, श्रीमती लक्ष्मण कुमारी शर्मा, श्रीमती काशी बाई, श्रीमती लक्ष्मी बाई, हमीरपुर में रानी राजेन्द्र कुमारी, गंगा देवी लोधी, गुलाब देवी, सरस्वती देवी, बाँदा में अनुसुइया देवी , किशोरी देवी थी। असहयोग आन्दोलन में स्वदेशी अपनाना तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना एक प्रमुख कार्यक्रम था। बुन्देलखण्ड में यह कार्यक्रम अनेक नगर, गाँव एवं कस्बों में चलाया गया। झाँसी में स्वरूपनाथ गौरहार के नेतृत्व में विदेशी कपड़ों की होली सरस्वती पाठशाला में जलायी गयी। इस कार्यक्रम में अनेक लोगों ने भाग लिया जिनमें महिलाओं की भागीदारी उल्लेखनीय थी। इस कार्यक्रम में पिस्ता देवी अपनी दोनों पुत्रियों सहित तथा चन्द्रमुखी पुलिस द्वारा बन्दी बना लिये गये।

इस आन्दोलन में बुन्देलखण्ड में कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया गया। देश का दूसरा खादी केन्द्र बुन्देलखण्ड जैतपुर (बेलाताल) में शुरू किया गया। गाँधी जी का सपना था देश को आत्मनिर्भर बनाना। इसी के लिये खादी केन्द्र को खोलने महात्मा गाँधी अपने सहयोगियों जे0 बी0 कृपलानी, पं0 जवाहर लाल नहरू के साथ यहाँ आये थे। इतना ही नहीं केन्द्र के पहले दिन खादी के बिक्री के कैश मेमो खुद गाँधी जी के हस्ताक्षरों से दिये गये थे।

निष्कर्ष :– असहयोग आन्दोलन में भारत के सभी वर्गों की भागीदारी रही। आन्दोलन ने पहली बार देश की जनता को इकट्ठा किया। अब किसान, मजदूर, दस्तकार, व्यापारी, कर्मचारी, महिला–पुरूष, बच्चे , बूढ़े सभी लोग शामिल थे। इस तरह राष्ट्रीय आन्दोलन के सामाजिक आधार का विस्तार हुआ। आम जनता ने दमन एवं विपत्ति का सामना करने की क्षमता को प्रदर्शित किया। इस आन्दोलन में बड़ी संख्या में मुसलमानों की सहभागिता रही। भाईचारे की भावना जो इस आन्दोलन में दिखाई दी, वह बाद के वर्षों के लिये स्वप्न साबित हुयी। आन्दोलन ने देश के कोने–कोने में अपना प्रभाव डाला तथा कोई जगह ऐसी नहीं बची, जो आन्दोलन के प्रभाव से अछूती रह गयी हो। इस आन्दोलन ने देश की जनता को आधुनिक राजनीति से परिचित कराया तथा उनमें स्वतन्त्रता की भूख जगायी। आन्दोलन में सभी वर्गों की जन सहभागिता से लगा कि भारत के लोग राजनीतिक संघर्ष प्रारम्भ कर सकते हैं तथा गुलामी की दासता से मुक्ति पाने के लिये राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक संघर्ष कर सकता है। इस आन्दोलन को अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ देश व्यापी जन संघर्ष का प्रथम प्रयास कहा गया। इस आन्दोलन से यह अवधारणा कि ब्रिटिश सत्ता अजेय है तथा उसे कोई परास्त नहीं कर सकता। इस अवधारणा को इस आन्दोलन ने 'सत्याग्रह' के द्वारा कड़ी चुनौती दी तथा इसकी जड़ों को हिलाकर रख दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1– राय, चौधरी हेमचन्द्र, 'पालिटिकल हिस्ट्री ऑफ एशियन्ट इण्डिया' किताब महल, इलाहाबाद 1971

2– त्रिपाठी, मोतीलाल, 'बुन्देलखण्ड दर्शन' झाँसी 1988

3– गुप्ता, भगवान दास, 'मुगलों के अर्न्तगत बुन्देलखण्ड का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास' हिन्दी बुक सेन्टर नई दिल्ली

4– तिवारी, गोरे लाल, 'बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास' काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी 1933

5– चन्द्र, विपिन, 'भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष' हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1990

6– शुक्ला, चिन्तामणि, 'गाँधी युगीन स्वतन्त्रता संग्राम में उ0प्र0 का योगदान' मथुरा राष्ट्रीय प्रेस 1988

7– सुमन , रामनाथ 'उत्तर प्रदेश में गाँधी जी' सूचना विभाग लखनऊ 1969

8– कुमार, प्रभात 'स्वतन्त्रता संग्राम और गाँधी जी का सत्याग्रह' दिल्ली 2000

9– '1921 के असहयोग आन्दोलन की झाँकियाँ', प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली 1971

10– सीतारम्मैया, पट्टाभि, 'कांग्रेस का इतिहास' भाग 2 सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली

11– मोदी, डॉ0रंजना, 'बुन्देलखण्ड में स्वातन्त्रय आन्दोलन' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी 1993

12– गुप्ता, स्नेहलता 'स्वतन्त्रता आन्दोलन में बुन्देलखण्ड की महिलाओं का योगदान', बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी 2000

■ ■ ■